अपठित काव्यांश

काव्यांश 1

चींटी है प्राणी सामाजिक
वह श्रमजीवी, वह सुनागरिक।
देखा चींटी को?
उसके जी को?
भूरे बालों की सी कतरन
छिपा नहीं उसका छोटापन
वह समस्त पृथ्वी पर निर्भय
विचरण करती श्रम में तन्मय
वह जीवन की चिनगी-अक्षय।।
वह भी क्या देही है, तिल-सी?
प्राणों की रिलमिल झिलमिल सी!
दिनभर में वह मीलों चलती
अथक, कार्य से कभी न टलती!

प्रश्न

1. कवि ने चींटी को श्रमजीवी कहा है, क्योंकि–

(क) वह दूसरों के श्रम पर जीती है
(ख) वह दूसरों से श्रम करने की प्रेरणा लेती है
(ग) वह सदैव श्रम में लीन रहकर जीती है
(घ) वह दूसरों को श्रम करने की प्रेरणा देती है।

2. 'भूरे बालों की-सी कतरन' के माध्यम से कवि किस ओर संकेत करता है?

(क) चींटी के श्रमजीवी होने की ओर
(ख) चींटी के बाल न होने की ओर
(ग) चींटी के भूरे बालों की ओर
(घ) चींटी के लघु आकार की ओर

3. 'जीवन की चिनगी-अक्षय' का आशय निम्नलिखित में से क्या है?

(क) बहुत दुखी होना
(ख) बहुत क्रोधी होना
(ग) कभी कम न होने वाले उत्साह से भरपूर होना
(घ) जीवन में चिंगारी जैसे चमकदार होना

4. काव्यांश से चींटी की किस विशेषता का पता चलता है?

(क) वह सुंदर नागरिक है
(ख) वह अथक काम करने वाली है
(ग) वह चिनगारी जैसी है
(घ) वह तिल-सी दिखती है

5. 'भूरे बालों की-सी कतरन' में कौन-सा अलंकार है?

(क) उपमा अलंकार
(ख) उत्प्रेक्षा अलंकार
(ग) अनुप्रास अलंकार
(घ) यमक अलंकार

उत्तर

1. (ग) वह सदैव श्रम में लीन रहकर जीती है
2. (घ) चींटी के लघु आकार की ओर
3. (ग) कभी कम न होने वाले उत्साह से भरपूर होना
4. (ख) वह अथक काम करने वाली है
5. (क) उपमा अलंकार

काव्यांश 2

ज्यों निकलकर बादलों की गोद से,
थी अभी इक बूँद कुछ आगे बढ़ी।
सोचने फिर-फिर यही जी में लगी,
आह, क्यों घर छोड़कर मैं यों बढ़ी।
देव, मेरे भाग्य में है क्या बदा,
मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में।
जल उठूँगी गिर अँगारे पर किसी
चू पड़ूँगी या कमल के फूल में।

बह उठी उस काल इक ऐसी हवा,
वह समंदर ओर आई अनमनी।
एक सुंदर सीप का था मुँह खुला
वह उसी में जा गिरी, मोती बनी।
लोग अकसर हैं, झिझकते-सोचते
जबकि उनको छोड़ना पड़ता है घर।
किंतु घर का छोड़ना अकसर उन्हें,
बूँद-सा कुछ और ही देता है कर।

प्रश्न

1. बूँद किसे छोड़कर आगे बढ़ी थी?

(क) झरने को
(ख) कमल के फूल को
(ग) बादलों को
(घ) पर्वत की बर्फ को

2. घर छोड़कर निकली बूँद 'आह!' क्यों कह रही है?

(क) खुशी के कारण
(ख) अपने भविष्य की अनिश्चितता से चिंतित होने के कारण
(ग) कमल के फूल पर गिरने की आशा के कारण
(घ) मोती बनने की लालसा की चाह के कारण

3. बूँद समुद्र की ओर अनमने भाव से क्यों आई?

(क) समुद्र में गिरने के भय से
(ख) समुद्र का पानी नमकीन होने के कारण
(ग) वह स्वेच्छा से समुद्र की ओर नहीं आई थी
(घ) वह सीप में गिरकर मोती बनाना चाहती थी

4. वह सीप कहाँ था जिससे बूँद गिरकर मोती बन गई?

(क) नदी के किनारे
(ख) समुद्र में
(ग) कमल के फूल के पास
(घ) धूल के पास

5. कवि ने मनुष्य के भाग्य की तुलना किससे की है?

(क) कमल के पुष्प से
(ख) सीप की मोती से
(ग) समुद्र के किनारे बहती हवा से
(घ) धरती की ओर गिरती बूँद से

उत्तर

1. (ग) बादलों को
2. (ख) अपने भविष्य की अनिश्चितता से चिंतित होने के कारण
3. (ग) वह स्वेच्छा से समुद्र की ओर नहीं आई थी
4. (ख) समुद्र में
5. (घ) धरती की ओर गिरती बूँद से

काव्यांश 3

निर्निमेष, क्षण-भर, मैं उनको रहा देखता-
सहसा मुझे स्मरण हो आया, कुछ दिन पहले
बीज सेम के बोये थे, मैंने आँगन में,
और उन्हीं से बौने पौधों की यह पलटन
मेरी आँखों के सम्मुख अब खड़ी गर्व से,
नन्हें, नाटे, पैर पटक, बढ़ती जाती है।
तबसे उनको देखता रहा धीरे-धीरे
अनगिनती पत्तों से लद, भर गईं झाड़ियाँ
हरे-भरे टँग गए कई मखमली चँदोवे से!

बेलें फैल गईं बल खा, आँगन में लहरा
और सहारा लेकर बाड़े की टट्टी का
हरे-हरे सौ झरने फूट पड़े ऊपर को,
मैं अवाक् रह गया, वंश कैसे बढ़ता है!
छोटे, तारों से छितरे, फूलों के छींटे
झागों से लिपटे लहरी श्याम लतरों पर
सुंदर लगते थे मावस के हँसमुख नभ से
चोटी के मोती-से, आँचल के बूटों से!

प्रश्न

1. पौधों की पलटन को 'बौना' क्यों कहा गया है?

(क) बौने व्यक्ति जैसे होने के कारण

(ख) अनेक तथा बहुत छोटे होने के कारण

(ग) संख्या में अनगिनत एवं फौजी जैसे होने के कारण

(घ) पैर पटककर बढ़ते जाने के कारण

2. 'मखमली चँदोवे' किसे कहा गया है?

(क) सुंदर मखमल जैसे तंबू को

(ख) हरे रंग के सुंदर तंबू को

(ग) नीले आसमान को

(घ) सेम की हरी-भरी बेलों को

3. इनमें से कौन-सा विकल्प फूलों की विशेषता से संबंधित नहीं है?

(क) तारों जैसे छितराए हुए

(ख) झागों जैसे लिपटे हुए

(ग) खुशबूदार

(घ) छोटे-छोटे

4. निम्नलिखित में से किसे हँसमुख कहा गया है?

(क) पूर्णिमा के नभ को

(ख) प्रातःकाल के नभ को

(ग) सायंकाल के नभ को

(घ) अमावस्या के नभ को।

5. 'आँचल के बूटों-से' में निम्नलिखित में से कौन-सा अलंकार है?

(क) उत्प्रेक्षा अलंकार

(ख) रूपक अलंकार

(ग) यमक अलंकार

(घ) उपमा अलंकार

उत्तर

1. (ख) अनेक तथा बहुत छोटे होने के कारण

2. (घ) सेम की हरी-हरी बेलों को

3. (ग) खुशबूदार

4. (घ) अमावस्या के नभ को

5. (घ) उपमा अलंकार

काव्यांश 4

रुपसि! तेरा घन केश-पाश!
श्यामल-श्यामल कोमल-कोमल
लहराता सुरभित केश-पाश।
नभ गंगा की रजघाट में
धो आई क्या इन्हें रात?
कंपित हैं तेरे सजल अंग
सिहरा-सा तन है सद्‌य स्नात
भीगी अलकों के छोरों से
चूती बूँदें कर विविधलास।
रुपसि! तेरा घन केश-पाश!
सौरभ भीना झीना गीला
लिपटा मृदु अंजन-सा दुकूल
पथ में जुगनू के स्वर्ण-फूल
दीपक-सा देता बार-बार
तेरा उज्ज्वल चितवन-विलास!
रुपसि तेरा घन केश-पाश!
उच्छवसित वक्ष पर है चंचल
वक-पाँतों का अरविंद हार
तेरी निश्वास से छू भू को
बन-बन जाती मलयज बयार,
केकी रव की नूपुर ध्वनि सुन
जगती-जगती की मूक प्यास!
रुपसि! तेरा घन केश-पाश!

प्रश्न

1. काव्यांश में 'रुपसि!' कहकर किसे संबोधित किया गया है?

(क) रात्रि को
(ख) वर्षा को
(ग) बिजली को
(घ) इंद्रधनुष को

2. सुंदरी का शरीर सिहरा हुआ है, क्यों?

(क) सर्दी के कारण
(ख) वर्षा में भीग जाने के कारण
(ग) अभी-अभी नहाकर आने के कारण
(घ) भयभीत होने के कारण

3. नृत्य करती बूँदें कहाँ से गिर रही हैं?

(क) पेड़ों की पत्तियों से
(ख) काले-काले बादलों से
(ग) सुंदरी के बालों से
(घ) सुंदरी की आँखों से

4. सुंदरी के पथ में दीपक कौन जलाते हैं?

(क) आसमान में चमकती बिजली
(ख) नभ में उड़ते पक्षी
(ग) जुगनू रूपी सुनहरे पुष्प
(घ) धरती पर जले हुए दीप

5. 'जगती-जगती की मूक प्यास!' में कौन-सा अलंकार है?

(क) रूपक अलंकार
(ख) अनुप्रास अलंकार
(ग) यमक अलंकार
(घ) उत्प्रेक्षा अलंकार

उत्तर

1. (ख) वर्षा को
2. (ग) अभी-अभी नहाकर आने के कारण
3. (ग) सुंदरी के बालों से
4. (ग) जुगनू रूपी सुनहरे पुष्प
5. (ग) यमक अलंकार

काव्यांश 5

हे चिर महान्!
यह स्वर्ण रश्मि छू श्वेत भाल,
बरसा जाती रंगीन हास,
सेली बनता है इंद्रधनुष
परिमल मल मल जाता बतास।
तू रागहीन तू हिम निधान!
नभ में गर्वित झुकता न शीश
पर अंक लिए हैं दीन क्षार!
मन गल जाता नत विश्व देख
तन सह लेता है कुलिश भार।
कितने मृदु कितने कठिन प्राण!

टूटी है तेरी कब समाधि
झंझा लौटे शत हार-हार,
बह चला दृगों से किंतु नीर
सुनकर जलते कण की पुकार।
सुख से विरक्त, दुख में समान!
मेरे जीवन का आज मूक,
तेरी छाया से हो मिलाप,
तन तेरी साधकता छू ले,
मन ले करुणा की थाह नाप!
उर में पावस, दृग में विहान!

प्रश्न

1. रंगीन हास कौन बरसा जाती है?

(क) चंद्रमा की किरणें
(ख) तारों की किरणें
(ग) सूर्य की किरणें
(घ) सुंदर इंद्रधनुष

2. 'नभ में गर्वित झुकता न शीश' में किसका सिर गर्व से उठा रहता है?

(क) बादल का
(ख) हिमालय का
(ग) ऊँचे वृक्षों का
(घ) इंद्रधनुष का

3. निम्नलिखित में से कौन तपस्या में रत की समाधि भंग नहीं कर सका?

(क) तूफानी हवाएँ
(ख) तूफानी वर्षा
(ग) भयंकर बर्फबारी
(घ) बादलों का भयंकर गर्जन

4. हिम निधान की आँखों में इनमें से क्या समाया हुआ है?

(क) वर्षा
(ख) दया
(ग) सवेरा
(घ) विरक्ति

5. 'बतास' शब्द का पर्यायवाची इनमें से कौन-सा शब्द है?

(क) वर्षा
(ख) हँसी
(ग) एक मीठा खाद्‍य पदार्थ
(घ) हवा

उत्तर

1. (ग) सूर्य की किरणें
2. (ख) हिमालय का
3. (क) तूफानी हवाएँ
4. (ग) सवेरा
5. (घ) हवा

काव्यांश 6

सुरपति के हम ही हैं अनुचर जगतप्राण के भी सहचर,
मेघदूत की सजल कल्पना चातक के चिर जीवनधर;
मुग्ध शिखा के नृत्य मनोहर सुभग स्वाति के मुक्ताकर;
विहग वर्ग के गर्भ विधायक, कृषक बालिका के जलधर!
जलाशयों में कमल-दलों-सा हमें खिलाता नित दिनकर,
पर बालक-सा वायु सकल दल बिखरा देता चुन सत्वर;
लघु लहरों के चल पलनों में हमें झुलाता जब सागर,
वही चील-सा झपट, बाँह गह, हमको ले जाता ऊपर!
भूमि गर्भ में छिप विहंग से, फैला कोमल रोमिल पंख,
हम असंख्य अस्फुट बीजों में, सेते साँस, छुड़ा जड़ पंक,
विपुल कल्पना-से त्रिभुवन की, विविध रूप धर, भर नभ अंक,
हम फिर क्रीड़ा कौतुक करने, छा अनंत उर में निःशंक।
कभी चौकड़ी भरते मृग-से भू पर चरण नहीं धरते,

प्रश्न

1. काव्यांश में सुरपति के अनुचर किसे कहा गया है?

(क) पवन | (ख) पक्षी
(ग) बादल | (घ) वर्षा

2. वर्षा की कुछ बूँदें स्वाति नक्षत्र में किस रूप में बदल जाती हैं?

(क) ओस के रूप में | (ख) जलधर के रूप में
(ग) मुक्ताकर के रूप में | (घ) सागर के रूप में

3. सागर बादल को किस तरह आनंदित करता है?

(क) लोरी सुनाकर | (ख) पालने में झूला झुलाकर
(ग) उपवन में घुमाने ले जाकर | (घ) उनके साथ क्रीड़ा में शामिल होकर

4. बादल किनके समान कुलाँचे भरते हुए धरती-पर कदम नहीं रखते हैं?

(क) गाय के बछड़े के समान | (ख) हिरन के बच्चों के समान
(ग) खरगोश के शावक की तरह | (घ) पक्षियों के बच्चों की तरह

5. 'पर बालक-सा वायु दकल दल, बिखरा देता चुन सत्वर' में कौन-सा अलंकार है?

(क) रूपक अलंकार | (ख) यमक अलंकार
(ग) उपमा अलंकार | (घ) अनुप्रास अलंकार

उत्तर

1. (ग) बादल
2. (ग) मुक्ताकर के रूप में
3. (ख) पालने में झूला झुलाकर
4. (ख) हिरन के बच्चों के समान
5. (घ) अनुप्रास अलंकार

काव्यांश 7

जग में सचर-अचर जितने हैं, सारे कर्म-निरत हैं।
धुन है एक-न-एक सभी को, सबके निश्चित व्रत हैं।
जीवन-भर आतप सह, वसुधा पर छाया करता है।
तुच्छ पत्र की भी स्वकर्म में कैसी तत्परता है।।
सिंधु-विहग तरंग पंख को फड़काकर प्रतिक्षण में।
है निमग्न नित भूमि-खंड के सेवन में, रक्षण में।
कोमल मलय पवन घर-घर में सुरभि बाँट आता है।
शस्य सींचने घन जीवन धारण कर नित जाता है।।
रवि जग में शोभा सरसाता, सोम, सुधा बरसाता।
सब हैं लगे कर्म में, कोई निष्क्रिय दृष्टि न आता।
है उद्‌देश्य नितांत तुच्छ तृण के भी लघु जीवन का।
उसी पूर्ति में वह करता है, अंत कर्ममय तन का।।
तुम मनुष्य हो, अमित बुद्‌धि-बल-बिलसित जन्म तुम्हारा।
क्या उद्‌देश्य-रहित है जग में, तुमने कभी विचारा?
बुरा न मानो, एक बार, सोचो तुम अपने मन में।
क्या कर्तव्य समाप्त कर लिया, तुमने निज जीवन में?

प्रश्न

1. 'तुच्छ पत्ते द्‌वारा धरती को छाया प्रदान करने' के माध्यम से किसकी महत्ता प्रकट होती है?

(क) त्याग की
(ख) दयालुता की
(ग) कर्म में रत रहने की
(घ) प्रेम की

2. सिंधु रूपी विहंग किसकी रक्षा करता है?

(क) नभ की
(ख) अंडे की
(ग) फसलों की
(घ) धरती की

3. बादल जीवन धारण कर कहाँ जाते हैं?

(क) लोगों का मन हरसाने
(ख) खेतों को छाया पहुँचाने
(ग) फसलों की सिंचाई करने
(घ) सूखे तालाब को जल से भर देने

4. कवि मनुष्य को क्या सोचने के लिए कह रहा है?

(क) उद्‌देश्य प्राप्त करने के संबंध में
(ख) तन को कर्ममय बनाने में
(ग) विकसित बुद्‌धि-बल के बारे में
(घ) जीवन के कर्तव्य पूरे करने के बारे में

5. 'जीवन-भर आतप-सह' काव्यांश में कौन जीवन भर धूप सहता है?

(क) समुद्र
(ख) पेड़ और पत्ते
(ग) पक्षी
(घ) सूर्य

उत्तर

1. (ग) कर्म में रत रहने की
2. (घ) धरती की

3. (ग) फसलों की सिंचाई करने

4. (घ) जीवन के कर्तव्य पूरे करने के बारे में

5. (ख) पेड़ और पत्ते

काव्यांश 8

अमल धवल गिरि के शिखरों पर, बादल को घिरते देखा है।
छोटे-मोटे मोती जैसे—अतिशय शीतल वारि-कणों को
मानसरोवर के उन स्वर्णिम कमलों पर गिरते देखा है।
तुंग हिमालय के कंधों पर छोटी बड़ी कई झीलों के
श्यामल, शीतल, अमल सलिल में
समतल देशों से आ-आकर
पावस की ऊमस से आकुल
तिक्त-मधुर-बिसतंतु खोजते, हंसों को तिरते देखा है।
एक दूसरे से वियुक्त हो
अलग-अलग रहकर ही जिनको
सारी रात बितानी होती
निशा-काल के चिर अभिशापित
बेबस, उन चकवा-चकई का
बन्द हुआ क्रंदन, फिर उनमें
उस महान सरवर के तीरे
शैवालों की हरी दरी पर, प्रणय-कलह छिड़ते देखा है।

प्रश्न

1. कवि ने वारि-कणों को कहाँ गिरते देखा है?

(क) धरती पर
(ख) पहाड़ पर
(ग) कमल के फूलों पर
(घ) फसलों पर

2. इनमें से कौन-सा विकल्प झीलों के पानी की विशेषता से संबंधित नहीं है?

(क) श्याम वर्ण वाला
(ख) शीतल
(ग) स्वच्छ
(घ) समतल

3. हंस झील में क्या खोज रहे हैं?

(क) मोती
(ख) कमल के पुष्प पर पड़ी ओस
(ग) कमलनाल के अंदर वाले कोमल रेशे
(घ) कमल-पुष्प में छिपा पराग

4. चकवा-चकई क्रंदन क्यों कर रहे थे?

(क) निशा-काल में न मिल पाने के कारण
(ख) निशा के इंतजार में
(ग) प्रभात होने के भय से
(घ) सूर्योदय होने के भय से

5. 'शैवालों की हरी दरी पर' में कौन-सा अलंकार है?

(क) उपमा अलंकार
(ख) अनुप्रास अलंकार
(ग) मानवीकरण अलंकार
(घ) रूपक अलंकार

उत्तर

1. (ग) कमल के फूलों पर
2. (घ) समतल
3. (ग) कमल नाल के अंदर वाले कोमल रेशे
4. (क) निशा-काल में न मिल पाने के कारण
5. (घ) रूपक अलंकार

स्वयं करें

निम्नांकित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्पों में से छाँटिए–

①

हिमालय के आँगन में उसे प्रथम किरणों का दे उपहार।
उषा ने हँस अभिनंदन किया और पहनाया हीरक हार।
जगे हम, लगे जगाने विश्वलोक में फैला फिर आलोक,
व्योम-तम-पुंज हुआ तब नष्ट, अखिल संसृति हो उठी अशोक।
विमल वाणी ने वीणा ली कमल कोमल कर में सप्रीत!
सप्त स्वर सप्त सिंधु में उठे, छिड़ा तब मधुर साम-संगीत।
बचाकर बीज रूप से सृष्टि, नाव पर झेल प्रलय का शीत।
अरुण-केतन लेकर निज हाथ वरुण-पथ में हम बढ़े अभीत।

प्रश्न

1. हिमालय के आँगन में किरणों का पहला उपहार किसे मिलता है?

(क) भारत को (ख) उषा को
(ग) आँगन को (घ) हिमालय को

2. उषा किस प्रकार स्वागत करती है?

(क) तिलक लगाकर (ख) हीरक हार पहनाकर
(ग) पुष्पों का हार पहनाकर (घ) रत्नों का हार पहनाकर

3. विश्व में आलोक कब फैला?

(क) सूर्योदय होने पर (ख) विश्व के लोगों के जागने पर
(ग) भारतीय द्वारा ज्ञान का प्रसार करने पर (घ) शिक्षा में उन्नति होने पर

4. 'अभीत' शब्द का अर्थ निम्नलिखित में से कौन-सा है?

(क) दीवार विहीन (ख) निडरता से
(ग) भयभीत होकर (घ) प्रेम के बिना

5. 'अरुण-केतन लेकर निज हाथ' में कौन-सा अलंकार है?

(क) उपमा अलंकार (ख) रूपक अलंकार
(ग) यमक अलंकार (घ) मानवीकरण अलंकार

②

वहाँ नहीं तू जहाँ जनों से ही मनुजों को भय है,
सबको सबसे त्रास सदा सब पर सबका संशय है।
जहाँ स्नेह के सहज स्त्रोत से हटे हुए जनगण है,
झंडे या नारों के नीचे बँटे हुए जनगण हैं।

कैसे इस कुत्सित, विभक्त जीवन को नमन करूँ मैं?
किसको नमन करूँ मैं भारत! किसको नमन करूँ मैं।
तू तो है वह लोक जहाँ उन्मुक्त मनुज का मन है,
समरसता को लिए प्रवाहित शीत स्निग्ध जीवन है।
जहाँ पहुँच मानते नहीं नर-नारी दिगबंधन को,
आत्म-रूप देखते प्रेम में भरकर निखिल भुवन को।
कहीं खोज इस रुचिर स्वप्न पावन को नमन करूँ मैं?
किसको नमन करूँ मैं भारत! किसको नमन करूँ मैं?
भारत नहीं स्थान का वाचक, गुण विशेष नर का है,
एक देश का नहीं शील यह भूमंडल भर का है।
जहाँ कहीं एकता अखंडित, जहाँ प्रेम का स्वर है,
देश-देश में वहाँ खड़ा भारत जीवित भास्वर है।
निखिल विश्व की जन्मभूमि वंदन को नमन करूँ मैं।
किसको नमन करूँ मैं भारत! किसको नमन करूँ मैं?

प्रश्न

1. इनमें से किस स्थान को भारत नहीं कहा जा सकता है?

(क) जहाँ मनुष्य को मनुष्य से डर हो
(ख) जहाँ सभी एक-दूसरे पर शक करते हो
(ग) जहाँ आपसी प्रेम समाप्त हो गया हो
(घ) उपर्युक्त सभी

2. किस स्थान पर भारत की उपस्थिति कही जा सकती है?

(क) जहाँ असमानता का भाव है
(ख) जहाँ जीवन में उग्रता का भाव है
(ग) जहाँ के लोग दिशाओं के बंधन में बँधे हैं
(घ) जहाँ मनुष्य का मन उन्मुक्तता महसूस करता है

3. कवि को प्रेममय पवित्र भावना को खोजना पड़ रहा है, क्यों?

(क) यह भावना लोगों के बीच खो गई है
(ख) यह भावना समाज में विलुप्त हो गई है
(ग) यह भावना भौतिकवाद की चमक-दमक में खो गई है
(घ) यह भावना शोषित वर्ग ने छिपा लिया है

4. भारत की पहचान किससे होती है?

(क) उसके भौगोलिक स्वरूप से
(ख) पृथ्वी के किसी विशेष भू-भाग से
(ग) किसी विशेष देश के नाम से
(घ) उसकी प्रेम एवं एकता की भावना से

5. 'सबको सबसे त्रास सदा सब पर सबका संशय है' में कौन-सा अलंकार है?

(क) यमक अलंकार
(ख) उपमा अलंकार
(ग) अनुप्रास अलंकार
(घ) उत्प्रेक्षा अलंकार

③

नव-किरण का रथ सजा है
कलि-कुसुम से पथ सजा है
बादलों-से अनुचरों ने स्वर्ण की पोशाक धारी।

आ रही रवि की सवारी!
विहग बंदी और चारण,
गा रहे हैं कीर्ति-गायन,
छोड़कर मैदान भागी तारकों की फौज सारी!
आ रही रवि की सवारी!
चाहता, उछलूँ विजय कह,
पर ठिठकता देखकर यह
रात का राजा खड़ा है राह में बनकर भिखारी!
आ रही रवि की सवारी!

प्रश्न

1. काव्यांश में किस समय का चित्रण किया गया है?

(क) दोपहर का (ख) प्रातःकाल का

(ग) सायंकाल का (घ) आधी रात का

2. रवि की सवारी आ रही है। इस सवारी के साथ उसके अनुचर कौन हैं?

(क) चंद्रमा (ख) तारे

(ग) बादल (घ) पवन

3. रवि रूपी राजा का कीर्तिगायक कौन रहे हैं?

(क) मनुष्यगण (ख) देवतागण

(ग) आकाश के तारागण (घ) आकाश के पक्षीगण

4. रात का राजा भिखारी कैसे बन गया?

(क) उसे बंदी बना लिया गया है (ख) वह दूसरों के सामने हाथ फैलाने पर विवश है

(ग) उसकी चमक फीकी पड़ गई है (घ) उसकी प्रजा ने उसे राजा मानने से मना कर दिया है

5. 'छोड़कर मैदान भागी तारकों की फौज सारी' में कौन-सा अलंकार है?

(क) अनुप्रास अलंकार (ख) यमक अलंकार

(ग) उत्प्रेक्षा अलंकार (घ) मानवीकरण अलंकार